साक्षात्कार

लोगों को चाहिए डिजाइनर बच्चा

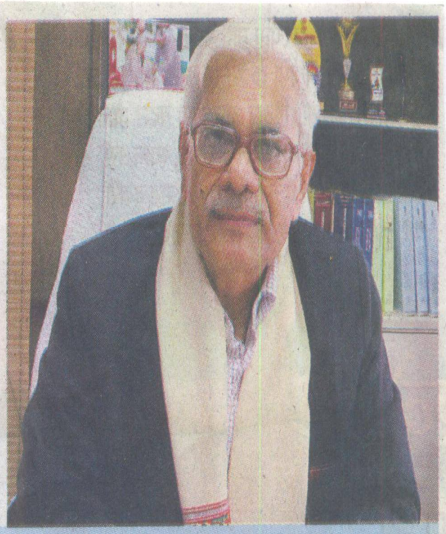

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की देश और दुनिया में उनकी अलग पहचान है. मनोविज्ञान पर अंग्रेजी में 27 किताबें लिखीं अथवा संपादित की हैं. हिंदी में भी दर्जनों किताबें लिखी हैं. दुनिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं. पिछले दिनों लोकमत समाचार से विभिन्न विषयों पर उन्होंने लंबी बातचीत की. बहुत बेबाकी के साथ अपनी बात रखते हैं. शिक्षा की गिरती गुणवत्ता पर उनका कहना है-'शिक्षा से लोगों की अपेक्षा बदल गई है. लोगों का बस चले और क्लोनिंग की सुविधा हो तो लोग बच्चा भी डिजाइनर ही लें!'

पढ़िए गिरीश्वर मिश्र के साथ लोकमत समाचार की विस्तृत बातचीत...

भारत में शिक्षा के स्तर से आप कितने संतुष्ट हैं? खासकर मैं बुनियादी शिक्षा की बात कर रहा हूं.

मैं स्पष्टता के साथ स्वीकार करना चाहता हूं कि शिक्षा हमारे देश की योजना में सबसे नीचे रखी जाती है. अब तो हमारे पास शिक्षा मंत्रालय भी नहीं है. अब है मानव संसाधन मंत्रालय. बच्चे की शिक्षा के संदर्भ में माता-पिता की अपेक्षा बदल गई है. बच्चा बेहतर मनुष्य बने, इस पर ध्यान नहीं है बल्कि चाहत यह है कि बच्चा ऐसे कार्यों में लगे जिसमें अधिक से अधिक आमदनी हो सके. इस चाहत का फायदा लेते हुए शिक्षा के नाम पर संस्थाएं जीवित हो गई हैं. नर्सरी स्कूल में दाखिला अत्यंत कठिन है. इस स्थिति पर किसी का नियंत्रण नहीं है. सरकार की दृष्टि इस पर नहीं है कि नर्सरी की पढ़ाई कैसी हो, बल नहीं दिया गया इसलिए गुणवत्ता ठीक नहीं है. दरअसल सुयोग्य व्यक्ति की परिभाषा में भी बदलाव आ गया है. यदि क्लोनिंग हो जाए तो डिजाइनर बच्चा लोग चाहेंगे. माता पिता की शिक्षा से आशा बदल गई. शिक्षा की गुणवत्ता समाज के नजरिए से प्रभावित हुई है. शिक्षाविदों को, सरकार को, पूरे तंत्र को इस पर विचार करना चाहिए. शिक्षा का माली कहीं सो रहा है.

क्या हिंदी के लिए यह संकट का दौर है? तकनीकी पढ़ाई के लिए अभी भी हमारे पास हिंदी के शब्द नहीं हैं इसलिए इंजीनियरिंग और मेडिकल में अंग्रेजी प्रमुख भाषा बनी हुई है?

यदि हिंदी के उपयोग का क्षेत्र विकसित करना है तो उसे जरूरत के अनुरूप ढालना होगा. विज्ञान के सभी प्रारूपों के लिए हमें शब्दावली चाहिए जो सरल हो. हमने कुछ कार्यशालाएं की हैं. भारत सरकार के सहयोग से हम हिंदी के सरल शब्द उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहे हैं. मैं समझता हूं कि भाषा प्रयोग के द्वारा जीवित रहती है. ऐसे शब्द यदि उपयोग में लाएं जो कठिन हों तो मुश्किल होगी. अंग्रेजी, अरबी और फारसी के बहुत सारे शब्द हैं जो हिंदी में मिल चुके हैं. मेरा मानना है कि भाषा का द्वार खुला रहना चाहिए, दूसरी भाषाओं से संबंध बने रहना चाहिए, हिंदी की व्याकरण के लिए भाषा सहज, सरल और

बहुत सारे देश हैं जहां हिंदी प्रमुखता से काम में आती है. वहां भारत के लोग गिरमिटिया के रूप में गए, श्रम से अपना स्थान बनाया. इसके अलावा कई देशों के छात्र यहां हिंदी सीखने आते हैं. मॉरिशस में हम हिंदी के उन्नयन की दिशा में सहयोग कर रहे हैं. हमने चार स्तर का हिंदी का मानक पाठ्यक्रम तैयार किया है. एक कुछ हफ्तों का है, दूसरा कुछ महीनों का है, एक पाठ्यक्रम एक साल का है. उसके बाद एमए का भी पाठ्यक्रम है. इसका उपयोग विदेश के अलावा देश के उन हिस्सों में भी किया जा सकता है जहां हिंदी बोली नहीं जाती है. इंटरनेट के माध्यम से इसकी पढ़ाई होगी और परीक्षा भी इंटरनेट पर ही होगी.

इन दिनों भारतीय ज्ञान परंपरा की बहुत बात हो रही है. आपका नजरिया क्या है?

जब हम भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करते हैं तो उसमें विविधता पाते हैं. चारवाक भी उतने ही भारतीय हैं जितना कि वेदांत. दर्शन की अपनी दृष्टियां हैं. जिसकी जैसी इच्छा हो, मानें. कोई बाध्यता नहीं है. विविधता हमको स्वीकार करनी चाहिए. भारत में जितने तरह के विचार विमर्श हुए हैं, उतनेआप किसी भी दूसरी संस्कृति में नहीं पाएंगे. यह हमारी संस्कृति है. विचार की इतनी स्वतंत्रता और कहीं नहीं. प्रायः ऐसा मान लिया जाता है कि भारत की जो ज्ञान परंपरा है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, कहीं पड़ी हुई है. वास्तविकता यह नहीं है. हां, कुछ शताब्दी पहले उस पर विचार विमर्श जरूर समाप्त हो गया. आप गौर कीजिए कि व्याकरण के मामले में पाणिनी ने जो कहा उस पर काफी विचार हुआ, एक प्रवाह था परंपरा में लेकिन यह जरूर है कि पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा पद्धति ने प्राचीन ज्ञान को अनावश्यक करार दे दिया. इसका नतीजा है कि हमारी परंपरा समाप्त हो रही है. मैं समझता हूं कि इस पर विचार करने की जरूरत है.

क्या प्राचीन ज्ञान पर शोध होना चाहिए? क्या विज्ञान की कसौटियों पर इसे कसना चाहिए?

निश्चित रूप से! वैज्ञानिक दृष्टि से उस पर विचार किया जाना चाहिए. बिना जाने ही उसकी उपेक्षा की जाए. बिना समझे ही कह दिया जाए कि

है. ध्यान का दिमाग पर क्या असर हो रहा है, इस पर शोध हो रहा है. योगी कहे तो आप स्वीकार नहीं करेंगे. दूसरे देश के वैज्ञानिक कहेंगे तो हम मान लेंगे. आज नेतृत्व के अध्ययन में गीता का उपयोग किया जा रहा है. बर्टन विश्वविद्यालय पेन्सिलवानिया में इसी पर शोध चल रहा है.

हम भारतवासी वसुधैव कुटुम्बकम का नजरिया रखते हैं. मनोविज्ञान इसकी व्याख्या कैसे करता है? ये सोच हमारे भीतर कहां से आई?

इस व्यापक सोच के पीछे बड़ा कारण है इस देश की जलवायु. इतनी ऋतुएं हैं, इतना परिवर्तन होता है मौसम में, इतने वनस्पति हैं, इतने नजारे हैं कि हम विस्तृत हो जाते हैं. परिवेश के साथ तालमेल बिठाते हैं हम. अमेरिका रूस को देखिए, एक ही जैसा मौसम साल भर बना रहता है. प्रकृति दुश्मन के रूप में वहां है तो वे घर को गर्म रखेंगे. प्रकृति पर नियंत्रण रखते हैं वे. हम प्रकृति के साथ चलते हैं. हमारी व्यापक सोच और उन्मुक्त होने के कारण यह भी है.

दूसरा कारण है कि हजारों वर्षों में जो जीवन शैली विकसित हुई है. वह हमें बेहतर बनाती है.

मनोविज्ञान की दृष्टि में धर्म क्या है?

धर्म जीवन के नियम के रूप में है तो समृद्ध करता है. जीवन बनाता है लेकिन धर्म का जब हम उपयोग करने लगते हैं तो परिणाम ठीक नहीं होता. सीमित दृष्टिकोण ठीक नहीं है.

कुछ लोगों को लगता है कि बाजार का मनोविज्ञान इंसानियत पर हमला कर रहा है? क्या यह सही है?

बाजार को हमने ही शुरू किया है, शक्तियां हमने ही दी हैं. वह हम पर हमला करने लगा. वह इतना आकर्षक लगता है कि हमने छूट दे रखी है कि जो करना हो करो. दुनिया में सरकारों ने बाजार के सामने समर्पण कर दिया है. बाजार हमारे सामने नई जरूरतें खड़ी करता है. यह पेन या फोन.आपके पास नहीं है, इस ब्रांड की कमीज या पैंट नहीं है आपके पास तो आप कमतर व्यक्ति हैं. हर व्यक्ति को यह लगता है. बाजार आप में हीनता की भावना पैदा करता है. आपको निरंतर कुंठित बनाए रखता है ताकि आपको लगे कि कुछ ऐसा है जो हमारे पास